THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

हम किस के लिए चौकस हैं?

What are we watching?

Author-Name withheld

The Christian Science Sentinel Volume 117, Issue 25, June 22, 2015

हाल ही में मैंने क्राइस्ट जीसस के शब्दों "चौकस रहो और प्रार्थना करो" के अर्थ तथा माँगों को अधिक समझने के लिए समय लगाया। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी बेकर एडी के मन में यह आज्ञा थी जब उन्होंने इसी पत्रिका की नींव रखी, 'सेंटिनल', जिसका उद्देश्य मरकुस 13:37 से लिया गया है, "जो मैं तुमसे कहता हूँ मैं सबसे कहता हूँ, चौकस रहो।" फिर से याद दिला दूँ, सेंटिनल की परिभाषा है, एक ऐसा जो चौकस रहता है या पहरा देता है।

फिर हमें किस के प्रति और कैसे चौकस रहना चाहिए?

हाल ही में एक साप्ताहिक क्रिश्चियन साँयस बाइबल लैसन चौकस रहने के विषय पर बहुत अधिक केन्द्रित था। यहाँ तक कि स्वर्ण मूलपाठ मरकुस में से वह पद्यांश था जिसका पहले उदाहरण दिया गया। मैंने इस विशिष्ट लैसन को कुछ महीने पहले पढ़ लिया था ताकि मुझे अपनी शाखा चर्च ऑफ क्राइस्ट, साँयटिस्ट, की आने वाली सर्विस के लिए उपयुक्त सोलो का चुनाव करने में मदद मिले और उस सप्ताह के लैसन के विषय की तरह "चौकस रहो और प्रार्थना करो" का आदेश मुझे प्रमुख लगा। सोलो के लिए मैंने श्रीमती एडी की कविता "माता की संध्या की प्रार्थना" का चुनाव किया (देखें कविताएँ, पृष्ठ 4)।

चर्च में बैठ कर सोलो सुनते हुए, मैंने महसूस किया कि यह कविता उन सहायक तरीकों को सम्मिलित करती है कि हमें कैसे चौकस रहना चाहिए। सोलो के दौरान जिस पद्यांश ने विशेष रूप से मेरा ध्यान आकर्षित किया, वह था:

उसके समर्थ पँख की छाया के नीचे;
संकीर्ण रास्ते के उस मधुर
रहस्य में,
खोजते हुए और प्राप्त करते हुए, फरिश्तों के साथ
गाओ:
"देखो मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ," – चौकस रहो
और प्रार्थना करो।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मैंने फिर सोचा कि श्रीमती एडी अपनी कविता को किस तरह शुरू करती हैं। मुझे इसने माता की एक समझ के बारे में बताया जो अपना ध्यान **परमेश्वर** की उपस्थिति की अच्छाई पर केन्द्रित कर रही है। मधुर, आरामदायक, दिव्य शक्ति पर जो उसे और उसके बच्चे दोनों को बाहों में लेती है और उसके बच्चे की रक्षा करती है।

ओ मृदु उपस्थिति, शाँति और खुशी और
शक्ति;
ओ दिव्य जीवन, जो प्रत्येक प्रतीक्षा की
घड़ी को अपना लेता है,
प्रेम* तुम जो घोंसले में रहने वाले पक्षी की
लड़खड़ाती उड़ान की चौकसी करते हो!
आज रात मेरे बच्चे की ऊँची उड़ान में
उसे बनाए रखना।

सच कहूँ तो मैंने अकसर चौकस रहने को यह सोचने के समान माना है कि बुराई अब क्या करने की कोशिश करेगी और फिर प्रार्थना द्वारा खुद को बचाए रखना। अपने मानसिक बुर्ज के शिखर पर खड़े हुए, एक प्रहरी बन कर हमें बुराई के मत के प्रति सचेत रहना होता है; परन्तु हम अपनी चौकसी को सोच की एक विकृत आदत नहीं बनाना चाहते जो बुराई – असफलताओं, पाप, भय, विनाश या यहाँ तक कि मृत्यु को एक 'वास्तविकता' बना दे। इस तरह की एकाग्रता हमें यह सोचने पर मजबूर कर सकती है कि त्रुटि वास्तविक तथा शक्तिशाली है, यह कि हम चीज़ों को सुधारने के लिए व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदार हैं, या यह कि **परमेश्वर** को हमारी ज़रूरत है कि हम **उसे** समस्याएँ बताएँ। परन्तु वह **अपनी** स्वयं की आध्यात्मिक रचना का संचालन करता है, हमें सम्मिलित करते हुए और केवल अच्छाई इसका विशिष्ट वर्णन करती है। यह समझ हमारे चौकस रहने का एक महत्वपूर्ण भाग है, और उस त्रुटि को अनावृत करता है जिसे दिखाने की तथा व्यवस्थित करने की ज़रूरत होती है।

मुझे चौकसी सदा प्रेम की नज़रों के द्वारा करनी होगी।

मेरी बेकर एडी की साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिपचर्स में हम पढ़ते हैं "चौकस, सौम्य तथा सतर्क रहो" (पृष्ठ 324)। मैंने महसूस किया कि यदि मुझे "सौम्य" रहना है, मुझे चौकसी सदा प्रेम की नज़रों के द्वारा करनी होगी। मैं भय, घृणा, पक्षपात या अहम की एक निजी सोच को भी स्वयं को प्रभावित नहीं करने दे सकती, यदि मैं असल में चौकस हूँ तथा प्रार्थना कर रही हूँ।

अब मैं जीसस की "चौकस रहो और प्रार्थना करो" की आज्ञा के बारे में इस अर्थ के साथ सोचती हूँ, "**परमेश्वर** की अनन्त अच्छाई के ज्ञान में स्थिर हो जाओ और उसे सुनो जो दिव्य **प्रेम** तम्हें सिखाना चाहता है"। प्रेम तथा **परमेश्वर** की अनन्त अच्छाई में यकीन की बुनियाद हमारी प्रार्थनाओं का आधार होना चाहिए। बाइबल में कितने व्यक्ति इसे स्पष्ट करते हैं। जॉब ने इसे सीखा। डेविड इसे जानता था। जीसस ने इसे प्रमाणित किया। और ऐसी प्रार्थना, उन त्रुटिपूर्ण मतों का रहस्योद्घाटन करती है, जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता होती है।

इंसान का डर फंदा लाता है: परन्तु जो कोई भी
दाता में भरोसा करता है सुरक्षित रहेगा।
– नीतिवचन 29:25

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मुझे एक अनुभव हुआ था जिसने मुझे "चौकस, सौम्य तथा सतर्क" रहने का महत्व समझाया। मैं एक संस्था के बोर्ड की अध्यक्षता कर रही थी और यह एक बहुत भारी मानसिक बोझ बन गया था। बहुत सारे बारीकी वाले विस्तृत कार्यों को ध्यान में रखने के अलावा, मुझे लगता था कि संस्था के कुछ सदस्य मुझ से उन मुद्दों का समाधान करने की उम्मीद करते थे जिन्हें समस्त बोर्ड को एक साथ संबोधित करना चाहिए था और यह कि बोर्ड में सद्भावना की कमी बढ़ती जा रही थी। एक वक्त पर मैंने जान लिया था कि अब मुझे उन कार्यों में भाग नहीं लेना था जिन्हें करने का तरीका मुझे खराब लगता था। मैंने अनुपस्थित होने की छुट्टी माँगी और ऐसा महसूस करते हुए जैसे मैं शोक की अवस्था में थी, मैं इस सब से दूर रहने के लिए शहर से बाहर चली गई।

मुझे पता था कि मुझे चौकस रहने की आवश्यकता थी कि मेरी सोच धोखा खाए हुए और इन्हें वास्तविक बनाते हुए, की निजी अनुभूतियों में पड़े रहने के बजाए **परमेश्वर** की सर्वस्वता पर आधारित थी। घर के बाहर एक सुंदर, रमणीय वातावरण में बैठे हुए मैंने अपनी सोच को **परमेश्वर** के प्रेम की ओर केन्दित किया। मैंने उस समय बाइबल या अन्य कोई क्रिश्चियन साँयस साहित्य नहीं पढ़ा, केवल अपने **माता–पिता परमेश्वर** के सर्वत्र फैले हुए प्रेम को महसूस करना चाहती थी। ऐसा कर के मैं दिव्य **प्रेम** की उपस्थिति को स्वीकार रही थी और उस नकारात्मक सोच की फौज के लिए अपना मानसिक द्वार बंद कर रही थी जिसने मुझे हफ्तों से घेरा हुआ था। समझ आ जाने पर, **परमेश्वर** का प्रेम, सदा हमारे साथ वार्तालाप करते हुए, हर उस चीज़ का उपचार कर सकता है और करता है, जिसे उपचार की ज़रूरत होती है।

जैसे ही मैंने अपनी सोच को दिव्य **प्रेम** की तरफ केन्द्रित किया, मैंने महसूस किया ऐसी कुछ त्रुटियाँ थी जिनके प्रति मुझ सचेत होना था और उन्हें व्यवस्थित करना था–जैसे कि संस्था के सदस्यों के प्रति दुर्भावना और इंसानी व्यक्तित्व में शक्ति का मत। इसलिए मेरी प्रार्थना का प्रमुख केन्द्र इंसानी कार्यसूची की एक सोच को जाने देना था और अपनी सोच का **प्रेम** द्वारा रूपान्तरित होने देना था। मैंने यह भी स्वीकार किया कि मेरा या किसी और का इंसानी व्यक्तित्व, सही क्रिया का आधार नहीं था। अस्तित्व की वास्तविकता में **परमेश्वर** सदा नियंत्रण में होता है और हम सब **उसे** प्रतिबिम्बित करते हैं। मैंने यह जानने के लिए प्रार्थना की कि **परमेश्वर** के संचालन की समझ के द्वारा, कामों को करने का सही तरीका प्रकट होगा।

दो ही दिनों में मैं एकदम स्वाभाविक तरीके से बोर्ड में अपने अध्यक्ष के पद पर वापिस चली गई। बोझ की सोच चली गई थी और प्रेम तथा समन्वय की सोच पुनः वापिस आ चुकी थी।

एक क्रिश्चियन साँयस उपचारक ने एक बार मुझे कहा था कि हम चौकस होते हैं तथा प्रार्थना करते हैं, परन्तु हम त्रुटि और बुराई की संदिग्ध खोज करने नहीं निकल पड़ते। हम भरोसा कर सकते हैं कि जो कुछ भी सत्य के अनुसार नहीं है, हमारे सामने प्रकट हो जाएगा जैसे–जैसे हम सक्रियता से सचेत रहने की तथा मानव की आध्यात्मिक वास्तविकता को समझने की कोशिश करेंगें; और हम त्रुटि की अवास्तविकता को देख पाएँगे तथा उसे प्रमाणित कर पाएँगे। श्रीमती एडी की कविता "माता की संध्या की प्रार्थना" फिर से पूर्णतः इस की व्याख्या करती है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि माता अपने बच्चे की तरफ से चौकस रहती है ताकि वह निश्चिन्त रहे कि आगे कोई खतरा नहीं है और यह कि वह उसकी ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ नहीं करती, अपितु यह चौकसी इस समझ पर आधारित है कि **परमेश्वर** का आध्यात्मिक विचार होने के नाते, वह सदा सर्वदा सुरक्षित है:

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

प्रेम हमारा आश्रय स्थान है, केवल मेरी नज़रों को ही
फँदा, खाई, जाल दिखाई देता है:
उसका सच्चा निवास स्थल यहाँ, तथा निकट है,
वह मुझे, मेरे अपनों को और सबको
अपनी बाहों में लेता है।

यह जीवन के केवल एक इंसानी या नश्वर नज़रिए से होता है कि हमें एक फँदा, खाई, या जाल वास्तविकता की तरह दिखाई दे सकते हैं। **परमेश्वर** सदा हमें अनन्त प्रेम की बाँहों में रखता है। यदि हम महसूस करते हैं कि हम इसे सत्य की तरह नहीं देखते, हम शायद अपनी चौकसी में गलत दिशा में देख रहे हो। यह **परमेश्वर** की अच्छाई की आध्यात्मिक चेतना है जो उन त्रुटियों को प्रकट करती है जिन्हें देखना ज़रूरी होता है तकि हम उन्हें प्रार्थना ये संबोधित कर सकें। जिस तरह भजनसंहिता के रचयिता ने लिखा, "आओ परख कर देखो कि दाता कितना अच्छा है: वह मानव धन्य है जो उस पर भरोसा करता है।" (भजनसंहिता 34:8)

परमेश्वर सदा हमें अनन्त प्रेम की बाँहों में रखता है।

हम सब क्रिश्चियन साँयस के छठे नियम का बेहतर अनुपालन करने के लिए कार्य कर सकते हैं: "और हम सत्यनिष्ठा से वादा करते हैं, चौकस रहने का तथा प्रार्थना करने का कि वह **मन** हम में हो, जो क्राइस्ट जीसस में भी था; दूसरों के साथ वैसा ही करने का जैसा हम चाहते हैं वह हमारे साथ करें तथा दयालु, न्यायशील तथा पवित्र होने का (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 497)। हम सर्वदा अपने दिव्य **माता–पिता परमेश्वर** के साथ एक है। हमारी सौम्य चौकसी तथा प्रार्थना हमें इस सत्य की और अधिक समझ प्रदान करेगी।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.